मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 12

nbt.india

दिसंबर 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

अगरतला पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र में कवि सम्मेलन का 2
नगर-निगम विद्यालयों में शिक्षा शिविर का आयोजन 2
कुर्नूल में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम 3
कटक में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम 3
बीकानेर में संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन 4
कर्नाटक में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम 4
'राजेंद्र यादव : संकलित कहानियाँ' के उर्दू अनुवाद का लोकार्पण 5
पुस्तक परिचय 6
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय 7
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले 8

संवाद : बच्चों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास

देशभर में विज्ञान संचार के क्षेत्र में प्रसिद्ध व्यक्तित्व, प्रो. यशपाल के 88वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा 'बच्चों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास' विषय पर संवाद आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन एनबीटी सभागार, वसंत कुंज, नई दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अक्षय प्रतिष्ठान के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किये गए प्रार्थना-गीत व एनबीटी के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर के स्वागत-भाषण से हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित आगंतुकों एवं बड़ी संख्या में न्यासकर्मियों को संबोधित करते हुए प्रो. यशपाल ने कहा, "हम अकसर बच्चों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति विकसित करने की बात करते हैं, परंतु मुझे ऐसा लगता है कि बड़ों को बच्चों से सीखना चाहिए।" उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक प्रवृत्ति सैद्धांतिक नहीं, व्यावहारिक होती है। बच्चे रोजमर्रा के जीवन में अपनी क्षमता का प्रयोग करते हैं जो यह दरशाता है कि उनमें वैज्ञानिक सोच है। उन्होंने यह भी कहा कि जिज्ञासा बच्चों में वैज्ञानिक सोच को विकसित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उनके अनुसार, बच्चों में वैज्ञानिक सोच उन्हें बोलकर व उनके आस-पास रखी वस्तुओं के अवलोकन करने मात्र से नहीं आ जाती जबकि यह तो प्रश्न पूछने व स्वयं उन प्रश्नों के उत्तर खोजने से विकसित होती है।

कार्यक्रम के विषय का परिचय देते हुए कॉन्सोर्टियम ऑक्टेट के कार्यकर्ता, डॉ. शेखर सरकार ने अपना मत व्यक्त किया कि बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रवृत्ति बच्चों को चीजों की कल्पना करने तथा उसे वास्तविक रूप प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती है। उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक सोच केवल वैज्ञानिकों के अधिकार क्षेत्र में नहीं आती। यह सामान्य जन की भाषा है।

इस अवसर पर उपस्थित भागीदारों व बच्चों ने प्रो. यशपाल से बातचीत की तथा विषय से संबंधित अनेक प्रश्न किए। कार्यक्रम के अंत में रा.बा.सा.कें. की सुरेखा सचदेवा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन रा.पु.न्यास में संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र ने किया।

नवीनतम प्रकाशन

पूर्वोत्तर भारत की विभूतियाँ
जगमल सिंह
पृ. 122 ₹ 60.00
ISBN 978-81-237-7193-9

अगरतला पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र में कवि सम्मेलन का आयोजन

13 सितंबर, 2014 को एनबीटी के अगरतला पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र के गतिविधि कक्ष में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन त्रिपुरा के प्रमुख प्रकाशक व त्रिपुरा में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के मुख्य वितरकों में से एक, 'अक्षर प्रकाशन' द्वारा किया गया।

इस अवसर पर लगभग 35 कवियों ने भाग लिया तथा बांग्ला, मणिपुरी, कोकबोरक व चकमा भाषाओं में अपनी कविताओं का काव्य-पाठ किया। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से आए लगभग 100 व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस कवि सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रमुख कवियों में शामिल थे—श्री बिमलेंदु चक्रवर्ती, श्री रातुल देव बर्मन, श्री चंद्रकांता मुरासिंह, श्री कल्याणब्रत चक्रवर्ती, श्री स्वप्न सेनगुप्ता, श्रीमती शेफाली देववर्मा, श्री रघुनंदन सिंधा, श्रीमती काकोली गांगुली व श्री गौतम चकमा।

अक्षर प्रकाशन के प्रमुख, श्री सुब्रत देव ने सभी कवियों, अतिथियों व पुस्तक-प्रेमियों का स्वागत किया व उन्हें एनबीटी पुस्तक प्रोन्नयन केंद्रों में पुस्तक संबंधी गतिविधियों का आयोजन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यहाँ आए अतिथियों को सपरिवार व मित्रों सहित आने के लिए भी आमंत्रित किया।

कार্যক্রম का समन्वय एनबीटी के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय के क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री सुमित भट्टाचार्जी द्वारा किया गया।

नगर-निगम विद्यालयों में शिक्षा शिविर का आयोजन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 23 सितंबर, 2014 को शाहबाद डेरी (नई दिल्ली), उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के नगर-निगम विद्यालय में एक शिक्षा शिविर आयोजित किया गया। शिक्षा शिविर का उद्घाटन नगर-निगम पार्षद (शाहबाद डेरी) श्री शारदानंद सांगवान द्वारा किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या, श्रीमती सुनीता तनेजा; शिक्षाविद् व सामाजिक कार्यकर्ता, डॉ. माँगेराम तथा विद्यालय निरीक्षक के साथ-साथ शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं स्कूली शिक्षक भी उपस्थित थे।

विद्यालय के बच्चों एवं अध्यापकों को संबोधित करते हुए श्री शारदानंद सांगवान ने शिक्षा शिविर आयोजित करने के लिए एनबीटी की सराहना की तथा इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि एनबीटी द्वारा ऐसी बस्तियों एवं कलस्टर क्षेत्रों में भी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जहाँ अन्य संगठन व संस्थाएँ गतिविधियाँ आयोजित करते हुए संकोच करते हैं। श्री कप्तान सिंह तथा डॉ. माँगेराम ने भी एनबीटी के इस प्रयास की सराहना की व एनबीटी की पुस्तकों के उचित मूल्य एवं गुणवत्ता के बारे में बात की।

25 सितंबर, 2014 को मंगोलपुरी, 4-2 ब्लॉक, दिल्ली के नगर-निगम विद्यालय में एक अन्य शिक्षा शिविर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन नगर-निगम पार्षद (मंगोलपुरी), श्रीमती मंजू शर्मा द्वारा किया गया जहाँ शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं अध्यापकों के साथ विद्यालय की प्रधानाचार्या, श्रीमती रीता गुप्ता, डॉ. माँगेराम तथा

श्री कप्तान सिंह रंगा उपस्थित थे।

शिक्षा शिविर के उद्घाटन के अवसर पर श्रीमती मंजू शर्मा ने एनबीटी द्वारा बच्चों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने हेतु आयोजित की जाने वाली गतिविधियों के लिए एनबीटी को शुभकामनाएँ दीं।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ₹ 100.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

कुर्नूल में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 18 अक्तूबर, 2014 को जिला केंद्रीय पुस्तकालय, कुर्नूल, आंध्र प्रदेश में न्यास की नवसाक्षर पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित दो पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। इस लोकार्पण कार्यक्रम में बिट्टी मित्थल द्वारा लिखित व मुंजालुरी कृष्ण कुमारी द्वारा अनूदित पुस्तक 'चुग द स्क्विरल तथा राजीव ताम्बे द्वारा लिखित व श्रीवल्ली राधिका द्वारा अनूदित पुस्तक 'आदमी और परछाईं व अन्य कहानियाँ', का लोकार्पण किया गया। पुस्तकों का लोकार्पण मुख्य अतिथि व कुलपति, रायलसीमा विश्वविद्यालय, प्रो. के. कृष्ण नायक द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने पुस्तक-पठन का महत्व बताते हुए एनबीटी के बाल साहित्य पर बातचीत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता बाल पुस्तकों के प्रसिद्ध लेखक, श्री वियोगी द्वारा की गई। इस अवसर पर प्रसिद्ध बाल लेखक एवं कार्यकर्ता, डॉ. एम. हरिकृष्णन; लेखक, आलोचक, अनुवादक व सहायक प्राध्यापक, तेलंगाना विश्वविद्यालय, डॉ. बी. त्रिवेणी; साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित, श्री दसारी वेंकटरमन तथा प्रख्यात बाल साहित्य लेखक एवं कार्यकर्ता, डी.के. चादुवुला बाबू ने लोकार्पित पुस्तकों तथा एनबीटी की नवसाक्षर साहित्यमाला पर चर्चा की।

कार्यक्रम में जिले के विभिन्न भागों से आए साहित्यिक विद्वानों, प्रसिद्ध लेखकों व आलोचकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समन्वय रा.पु. न्यास में सहायक संपादक (तेलुगु) डॉ. पथिपका मोहन द्वारा किया गया।

कटक में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर 'उत्कल साहित्य समाज' के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 16 नवंबर, 2014 को शताब्दी भवन, कटक में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध ओड़िया कवि, पद्मभूषण रमाकांत रथ ने उच्च साहित्यिक गुणवत्ता वाले बहुमूल्य प्रकाशनों पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्यिक कलाकार आंतरिक एवं आध्यात्मिक दुनिया के निर्माता हैं। इस अवसर पर उन्होंने लोकार्पित पुस्तकों, 'महापात्र नीलमणि साहू श्रेष्ठ गल्प', 'चंद्रशेखर रथांका श्रेष्ठ गल्प' तथा 'भीम मोइन्का श्रेष्ठ काव्यकृति' के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। पुस्तकों का संकलन एवं संपादन क्रमशः प्रो. दाशरथी दास, प्रो. बौरिबंधु कर तथा डॉ. सत्यानंद स्वाइन ने किया। कार्यक्रम में अन्य तीन बाल पुस्तकों, 'बिरजू की मुसीबत', 'नन्हा पौधा' व 'ए बॉन्ड ऑफ लव' के ओड़िया अनुवाद का भी लोकार्पण किया गया।

ओड़िया साहित्य के प्रख्यात आलोचक, प्रो. दाशरथी दास द्वारा 'महापात्र नीलमणि साहू' पुस्तक की कहानियों पर विस्तृत चर्चा की गई तथा ओड़िया के महान कवि, जयदेव के साथ कथाकार की न्यायसंगत रूप से तुलना भी की गई। उन्होंने कहा कि महापात्र नीलमणि पाठकों को एक नई दुनिया का परिचय देते हैं जो शुरुआत में अवास्तविक-सी प्रतीत होती है, परंतु उनकी कहानियों को पूरा पढ़ लेने के पश्चात पाठकों को यही दुनिया वास्तविक-सी नज़र आने लगती है।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित, प्रो प्रफुल्ल कुमार मोहंती ने

मूल ओड़िया साहित्य के प्रकाशन तथा ओड़िया भाषी लोगों में पुस्तकें पढ़ने की आदत को बढ़ाने के लिए एनबीटी द्वारा किये गए प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता, उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष, डॉ. विजयानंद सिंह द्वारा व कार्यक्रम का समन्वय, रा.पु. न्यास में ओड़िया संपादक, डॉ. प्रमोद सर द्वारा किया गया।

बीकानेर में संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा बीकानेर में प्रौढ़ शिक्षण समिति के सहयोग से दिनांक 15 नवंबर, 2014 को 'पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की आदत' विषय पर संगोष्ठी व साथ ही, नवसाक्षर साहित्यमाला लेखन पर दो-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, प्रो. कर्नल अजेय कुमार गहलोत उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रो. गहलोत, ने कहा, ''यह चिंता का विषय है कि आज विद्यार्थियों, चाहे वे स्कूली विद्यार्थी हों या महाविद्यालयी, में पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की रुचि का अभाव दिखाई देता है।'' प्रो. गहलोत ने कहा कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने स्थापना से अब तक लगभग 15,000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर, हर वर्ग के लिए विभिन्न पुस्तकों के प्रकाशन एवं पठन-पाठन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। आज संचार क्रांति के युग में केवल कागज पर छपी पुस्तकों की संकल्पना समाप्त हो रही है। आज ई-बुक्स, ई-पुस्तकालय के तहत ऑनलाइन रीडिंग का चलन जोर पकड़ रहा है। ऐसे में न्यास द्वारा पाठकों के लिए ऑनलाइन साहित्य उपलब्ध कराने के प्रयास की भी उन्होंने सराहना की।

संगोष्ठी में अध्यक्षीय उद्‌बोधन करते हुए बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति के अध्यक्ष, डॉ. श्रीलाल मोहता ने कहा, ''आजकल विद्यार्थियों द्वारा केवल परीक्षा में अंकों की प्राप्ति की सीमित सोच तक ही पाठ्य-पुस्तकों का अध्ययन किया जाता है। ऐसी स्थिति में पाठ्येतर पुस्तकों के प्रति अभिरुचि विकसित करने में न्यास द्वारा आयोजित इस प्रकार की गतिविधियाँ सराहनीय हैं।''

दूसरे सत्र में नवसाक्षर साहित्यमाला लेखन पर दो-दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। इस कार्यशाला में चयनित सत्रह स्थानीय नवसाक्षर लेखकों ने भाग लिया। इस सत्र में सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् श्री शुभू पटवा एवं वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार श्री सरल विशारद ने संदर्भ व्यक्ति के रूप में रचनाकारों का प्रभावी एवं तथ्यपरक मार्गदर्शन किया।

यह कार्यशाला दूसरे दिन दिनांक 16 नवंबर, 2014 को भी जारी रही। उपस्थित 17 रचनाकारों में डॉ. मंगत बादल, श्री बुलाकी शर्मा, श्री हरीश बी. शर्मा, श्रीमती मोनिका गौड़, डॉ. ब्रजरतन जोशी, श्री मुकेश व्यास, श्री राजेंद्र जोशी, डॉ. मदन लढ़ा, श्री भवानी सोलंकी, डॉ. राधाकिशन सोनी, श्री संतोष कुमार गुप्ता, श्रीमती मंजू नागल, श्री ओमपुरोहित 'कागद', श्री मदन सैनी, डॉ. चेतना उपाध्याय तथा डॉ. उषा किरण सोनी शामिल थे।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से कार्यक्रम का समन्वय, संपादकीय सहायक, डॉ. कमलेश कुमारी द्वारा किया गया।

कर्नाटक में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित गतिविधियों की श्रृंखला में 20 नवंबर, 2014 को आदिचुनचनागिरी प्रौद्योगिकी संस्थान, चिकमगलूर के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर न्यास द्वारा प्रकाशित दो कन्नड़ अनुवाद, यथा—'गाँधी-नेहरू कॉरेस्पोंडेंस : ए सिलेक्शन' तथा 'द चाइल्ड'स लैंग्वेज एंड द टीचर' पुस्तकों का लोकार्पण व उन पर चर्चा आयोजित की गई।

इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि, पूर्व कुलपति, कुवेम्पु विश्वविद्यालय, डॉ. के. चिदानंद गौड़ा ने पुस्तकों का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा, ''पुस्तकें हमारी मित्र होती हैं। हम पुस्तक के साथ बातचीत कर सकते हैं। पुस्तक-पठन द्वारा हम अपनी एक अलग दुनिया का निर्माण कर सकते हैं।'' 'गांधी-नेहरू कॉरेस्पोंडेंस : ए सिलेक्शन' पुस्तक पर बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि विचारों में भिन्नता होने के बावजूद गाँधी व नेहरू में एक सौहार्दपूर्ण रिश्ता था। डॉ. गौड़ा ने 'द चाइल्ड्'स, लैंग्वेज एंड द टीचर' नामक पुस्तक की भी सराहना करते हुए कहा कि यह पुस्तक बच्चों में भाषायी कौशल के विकास के लिए जानकारी प्रदान करती है।

'गाँधी-नेहरू कॉरेस्पोंडेंस : ए सिलेक्शन' पुस्तक पर चर्चा करते हुए प्रसिद्ध कन्नड़ लेखक, श्री मंजूनाथ बेलवाड़ी ने कहा कि पुस्तक हमें हमारे स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। 'द चाइल्ड'स लैंग्वेज एंड द टीचर' पुस्तक पर बातचीत करते हुए एक अन्य विख्यात कन्नड़ लेखिका, श्रीमती डी. नलिना ने बताया कि यह पुस्तक बच्चों, अभिभावकों व शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ.जे.पी. कृष्णे गौड़ा ने कहा कि दोनों पुस्तकें उपयोगी जानकारियों सहित अत्यधिक रोचक हैं। इस अवसर पर शिक्षक, विद्यार्थी तथा अनेक पुस्तक-प्रेमी उपस्थित थे। प्रौद्योगिकी संस्थान, चिकमगलूर के प्रधानाचार्य डॉ. सी.के. सुब्बराया का भी कार्यक्रम में सहयोग रहा।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से संपादक, श्री एच. नागराजप्पा द्वारा कार्यक्रम का समन्वय किया गया।

'राजेंद्र यादव : संकलित कहानियाँ' के उर्दू अनुवाद का लोकार्पण

"बड़ा लेखक वही होता है जो अपने समय और समाज का सच सामने रखने का साहस रखता हो। हिंदी-उर्दू में ऐसे चार लेखक हुए हैं–मंटो, इस्मत चुगताई, कृष्णा सोबती एवं राजेंद्र यादव।" यह कथन प्रख्यात आलोचक मैनेजर पांडेय का है जो राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से मूल हिंदी में प्रकाशित 'राजेंद्र प्रसाद : संकलित कहानियाँ' शीर्षक पुस्तक के उर्दू अनुवाद के लोकार्पण-अवसर पर बोल रहे थे। 20 नवंबर, 2014 को एनबीटी मुख्यालय सभागार, दिल्ली में आयोजित इस लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री पांडेय ने यादव के 'चार पक्ष–कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार तथा विद्रोही विचारक' की मीमांसा भी की। उन्होंने कहा, "वे केवल कहानीकार ही नहीं, उपन्यासकार भी थे, फिर पत्रकार थे और विद्रोही विचारक भी।" उन्होंने यादव की अनेक कहानियों की चर्चा के क्रम में कहा, "यादव की कहानियों में मध्यवर्ग की मानसिकता और वास्तविकता व्यक्त हुई है।" राजेंद्र यादव की कहानियों के चरित्र पर उन्होंने कहा, "उनकी कहानियों का बुनियादी स्वभाव 'टूटन' था–समाज में क्या टूट रहा है, कहाँ वर्जनाएँ टूट रही हैं आदि।" यादव के व्यक्तित्व एवं लेखन के विविध पक्षों का उद्घाटन करते हुए श्री पांडेय ने उनकी 'स्वतंत्रताप्रियता' को भी याद किया, "वे साहित्य और साहित्यकारों की स्वतंत्रता के पक्के समर्थक थे।" मैनेजर पांडेय बोले। आगे जोड़ा, "साहित्य लोकतंत्र का प्रतीक है।" उन्होंने उनके 'चौंकाने की प्रवृत्ति' पर भी चर्चा की और नई कहानी दौर की तिकड़ी (मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव) में से एक होने को भी याद किया। "वे आगरे से थे और उनका उर्दू से गहरा रिश्ता था।" यह भी कहा।

समारोह के एक वक्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय में उर्दू विभागाध्यक्ष, प्रो. इब्ने कँवल ने राजेंद्र यादव की शख्सियत पर कहा, "राजेंद्र यादव अपने आप में एक अंजुमन थे। उन्होंने लोगों को लिखना सिखाया। हिंदी साहित्य की उन्होंने बड़ी सेवा की।" प्रो. कँवल अनुवाद विधा पर भी बोले। उन्होंने कहा, "अनुवाद से एक भाषा से दूसरी भाषा और एक देश से दूसरे देश तक पहुँचा जा सकता है।" अनुवाद की विशेषता उन्होंने इस तरह से बताई, "अनुवाद की खूबी यह है कि वह अनुवाद न लगे, मूल लगे; यही अनुवादक की विशेषता है।" उन्होंने आगे कहा कि शब्दशः अनुवाद से इंसाफ नहीं होता।

जेएनयू के जनाब अनवर पाशा ने राजेंद्र यादव को 'अपने आपमें एक संस्था' निरूपित करते हुए कहा, "राजेंद्र जी ने भाषा और साहित्य को विमर्श के केंद्र में ला दिया। उन्होंने 'स्त्री-विमर्श' और 'दलित-विमर्श' को भी हाशिये से निकालकर केंद्र में लाने का काम किया।" उन्होंने यादव के लेखन पर टिप्पणी करते हुए कहा, "भाषा-साहित्य-समाज को लेकर उनके अपने खास 'कमिटमेंट' थे और यह कमिटमेंट उनके लेखन में झलकता है।" उन्होंने कहा कि हाशिये में रहने वाले लोग उनके लेखन में जगह पाते हैं। जनाब पाशा ने यादव की लेखनी की मीमांसा के क्रम में यह भी कहा, "इन्सान के आभ्यंतर के संघर्ष को वे बाहर लाते हैं। केवल बयान भर कर देना ही उनकी लेखनी का उद्देश्य नहीं था।"

प्रख्यात कथाकार मुशर्रफ आलम जौकी ने राजेंद्र यादव को 'उर्दू और हिंदी के बीच का एक स्तंभ' बताया। उन्होंने कहा, "यादव जी उर्दू से मोहब्बत करते थे। वे कहा करते थे कि उर्दू को मुसलमानों से क्यों जोड़ दिया गया है।" उन्होंने यादव जी सरीखे लोगों को 'हमारी तहजीब का ही एक हिस्सा' बताया।

पुस्तक के अनुवादक डॉ. इरशाद नियाजी ने अनुवाद के अनेक आयामों को उद्घाटित करते हुए कहा, "अनुवाद के माध्यम से हम किसी भाषा को समृद्ध करते हैं।" उन्होंने अनुवाद को 'एक चुनौतीभरा काम' बताया। डॉ. नियाजी ने यादव की कहानियों की तुलना बया के घोंसले से की।

कार्यक्रम की शुरुआत रा.पु. न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर के स्वागत-संबोधन से हुई। निदेशक ने अतिथियों एवं आगंतुकों को जानकारी दी कि एनबीटी की हिंदी एवं अँग्रेजी की पुस्तकों के बाद उर्दू पुस्तकों की ही सर्वाधिक बिक्री होती है। निदेशक महोदय के संबोधन के पश्चात मंचस्थ अतिथियों के हाथों पुस्तक का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर न्यास-निदेशक डॉ. सिकंदर के साथ राजेंद्र यादव की सुपुत्री, सुश्री रचना यादव भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम का समन्वय न्यास में संपादक सह उर्दू भाषा प्रभारी डॉ. शम्स इकबाल ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कॉलेज के छात्रों की भी उपस्थिति रही।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015 के बाल मंडप में आपका स्वागत है!

क्या आप

- विद्यालय/स्वयंसेवी संगठन/बाल पुस्तकों के प्रकाशक हैं?
- समाचार-पत्र, पत्रिका अथवा बच्चों के लिए सोशल मीडिया से संबंधित हैं?
- बाल पठन-प्रवृत्ति के प्रोन्नयन से संबंधित सरकारी संगठन हैं?
- बाल साहित्य के क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं?

क्या आप

- पुस्तकों एवं पठन पर आधारित प्रहसन/नाटक प्रस्तुत करने;
- पैनल चर्चा और अथवा पठन सत्र आयोजित करने;
- 'बाल लेखक' सम्मेलन आयोजित करने,
- पुस्तकों एवं पठन से संबंधित सत्र / कार्यशाला आयोजित करने;
- बाल साहित्य पर आधारित संगोष्ठी/संवाद आयोजित करने;
- बच्चों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कोई गतिविधि आयोजित करने;

के इच्छुक हैं तो न्यास आपको बाल मंडप में मंच प्रदान करेगा।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

14-22 फरवरी, 2015

यदि आप पुस्तक प्रोन्नयन संबंधी गतिविधियों का आयोजन करने के लिए इच्छुक हैं तो 31 दिसंबर, 2014 तक अपने संगठन, कार्यक्रमों की प्रस्तावित तिथि की जानकारी, निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 पर भेज दें। **जल्दी कीजिए...**

पुस्तक परिचय

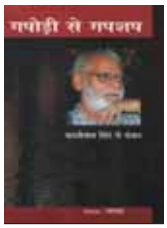

गपोड़ी से गपशप (काशीनाथ सिंह से संवाद)
संपा : पल्लव; पृ. 192 ₹ 400
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
प्रस्तुत पुस्तक प्रख्यात कथाकार काशीनाथ सिंह से विभिन्न साक्षात्कारकर्ताओं द्वारा लिये गए साक्षात्कारों का संकलन है। इसे पढ़ते हुए लेखक के मन-मिजाज और विचारों के साथ-साथ समकालीन समाज और राष्ट्र में क्या कुछ घटित हो रहा है इसे भी समझा जा सकता है। लेखक के विचार समकालीन समय-समाज के भी अक्स बन जाते हैं।

हीरामन हाई स्कूल (उपन्यास)
कुसुम कुमार; पृ. 336 ₹ 500
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
उपन्यास मानव संबंधों की 'ठेठ' पहचान से शुरू होता है और सत्ता के खेल-रेलमपेल में डूबते-तैरते आम जन की दम तोड़ती इच्छा-आकांक्षाओं पर जाकर समाप्त होता है। नारों और सरकारों के शोर से अलग यह कथा आम आदमी के सुख और संघर्ष का एक बयान है।

संत महात्माओं की कहानियाँ ; पृ. 172 ₹ 150
सस्ता साहित्य मंडल, एन-77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001
संत-महात्माओं पर केंद्रित इस पुस्तक में जीवनानुभवों का प्रेम-रस प्रवाहित होता है। आज की नई पीढ़ी में जिस तरह से, तेजी-से, नैतिक मूल्यों का क्षय हो रहा है, ऐसे में इस पुस्तक का महत्व काफी बढ़ जाता है। ये कहानियाँ 'बचपन' के सौजन्य से प्राप्त हैं।

कुल जमा बीस (उपन्यास)
रजनी गुप्त; पृ. 240 ₹ 395
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
कैशोर्य और यौवन की संधिरेखा पर दिग्भ्रमित आशु के माध्यम से लेखिका ने आज की शिक्षा प्रणाली, करियर की दौड़, अभिभावकों के बीच दरकते संबंध और इन सबके बीच आभासी दुनिया और वर्जनाहीन संबंधों के बीच आज के युवाओं की कशमकश को उकेरा है।

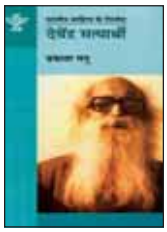

देवेंद्र सत्यार्थी (जीवनचरित)
प्रकाश मनु; पृ. 136 ₹ 50
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35, फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
साहित्य अकादेमी के 'भारतीय साहित्य के निर्माता' श्रृंखला के अंतर्गत देवेंद्र सत्यार्थी का प्रामाणिक जीवनचरित। लेखक देवेंद्र सत्यार्थी के समकालीन हैं और इस जीवनचरित में उन्होंने सत्यार्थी जी के यायावरी रूप को याद करते हुए उनके लेखन और संपादन कर्म पर भी लेखनी चलाई है।

देहरी का मन (कविता-संग्रह)
डॉ. प्रभा ठाकुर; पृ. 208 ₹ 350
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
भावप्रवण एवं विचारसमृद्ध कवयित्री का गीत-कविता का यह संग्रह भाषा, छंद, संरचना और स्वभाव–हर दृष्टि से सशक्त और समृद्ध है। इस संग्रह में रिश्ते-नाते हैं, समय व समाज है, द्वंद्व और प्रश्न हैं जो सोचने के लिए मजबूर करते हैं।

अश्वत्थामा का घाव (कविता संग्रह)
जनार्दन मिश्र; पृ. 152 ₹ 300
शब्द सारथी प्रकाशन, 1897/17ए, गोविंदपुरी एक्सटेंशन, कालकाजी, नई दिल्ली-110019
स्त्री मन की परतों को बाँचने में सिद्धहस्त कवि ने अपने इस नए कविता संग्रह में भी उसी उपक्रम में अपनी ऊर्जा लगाई है और कहना न होगा कि इसमें वे सफल भी रहे। स्त्री की वेदना और व्यथा को उकेरने के साथ ही वे स्त्री सौंदर्य का बखान भी बेहद गरिमामयी ढंग से करते हैं।

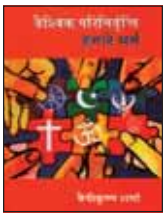

वैश्विक परिनिर्वृत्ति : हमारे धर्म
बैनी कृष्ण शर्मा; पृ. 272 ₹ 125
अनुभव प्रकाशन, ई-28, लाजपत नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद-5
इस ग्रंथ में उपनिषदों, मनुस्मृति, चाणक्य नीति, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म, आर्य समाज के मूल स्वरूप की पहचान की गई है। धर्म ग्रंथ विशेषकर मनुस्मृति को लेकर जो भ्रांतियाँ व्याप्त हैं उनका यथायोग्य निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

काव्याभा (कविता संग्रह)
संपा.: डॉ. अमरेन्द्र; पृ. 112 ₹ 200
समीक्षा प्रकाशन : जे.के. मार्केट, छोटी कल्याणी, मुजफ्फरपुर-842001
कथाकार-कवयित्री आभा पूर्वे के तीन कविता संग्रहों को एक ही जिल्द में समेटकर 'काव्याभा' नाम से पाठकों के समक्ष रखा गया है। कवयित्री का कथाकार रूप अधिक जाना-पहचाना है, सो, यह संग्रह उनके कवयित्री रूप को भी सामने लाने का एक प्रयास है। इस संग्रह में कवयित्री के दोहे, कविताएँ एवं ताँका (पाँच लाइना) शामिल हैं।

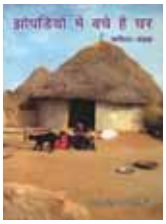

झोपड़ियों मे बचे हैं घर (कविता संग्रह)
श्याम सखा 'श्याम'; पृ. 96 ₹ 100
प्रयास ट्रस्ट, 12, विकास नगर, रोहतक-124001
'घर' को केंद्र में रखकर तीसेक कविताओं का संग्रह है यह। कवि दुखी है कि अब घरों में आँगन नहीं होते, तुलसी के पौधे नहीं होते। बाजारीकरण में फँसकर घर अब 'फ्लैट' में तब्दील हो गए हैं। 'घर' को खोजते-खोजते हैरान कवि को आखिरकार झोंपड़ियों में 'घर' के दर्शन होते हैं।

अपना तो मिले कोई (ग़ज़ल संग्रह)
देवमणि पांडेय; पृ. 108 ₹ 150
अमृत प्रकाशन, 1/5170, बलवीर नगर, गली नं. 8, शाहदरा, दिल्ली-110032
नए ग़ज़लकारों में देवमणि पांडेय ने अपनी अलग पहचान बनाई है। उनकी ग़ज़लें आम ग़ज़लों से कुछ अलग हैं। इनके यहाँ हिंदी और उर्दू की जुगलबंदी बेहद खुशनुमा और पुरसुकून लगती है। दरअसल, इनकी ग़ज़लें हिंदुस्तानी ग़ज़लें हैं जिनमें काबा भी है और काशी भी। स्वागत है बंधु!

आईना (कहानी-संग्रह)
लाडो कटारिया; पृ. 94 ₹ 250
सूर्य भारती प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006
बीस कहानियों का संग्रह। लेखिका ने अपने इस पहले कहानी-संग्रह में अपने जीवनानुभवों को पिरोया है। 'निज' का विकास जब 'हम' में होता है तभी कहानी, कहानी बन पाती है। लेखिका ने अपने इस पहले प्रयास में घर-परिवार, परिवेश और समाज तक को शामिल किया है। यहाँ रिश्तों पर कहानियाँ हैं तो सामाजिक विसंगतियों पर भी।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

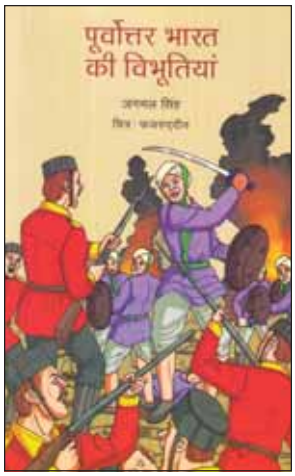

पूर्वोत्तर भारत की विभूतियाँ

जगमल सिंह

पृ. 122 ₹ 60.00

पूर्वोत्तर भारत में जितने महापुरुष हुए हैं और क्रांतिकारिता की जैसी परंपरा रही है उसका दुर्भाग्य से अब तक समुचित मूल्यांकन नहीं हो सका, न ही उन महापुरुषों और क्रांतिकारियों को वह महत्व मिल सका जिसके वे अधिकारी थे। प्रस्तुत पुस्तक इसी कमी को दूर करने का एक प्रयास है। पुस्तक में 15वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक के चुनिंदा 19 विभूतियों का जीवनवृत प्रस्तुत किया गया है। पूर्वोत्तर के प्रति हमारी सांस्कृतिक अज्ञानता को यह पुस्तक दूर करती है। महापुरुष शंकरदेव (1449-1568) पूर्वोत्तर के महान संत माने जाते हैं। उन्होंने तत्कालीन प्रचलित मान्यताओं और रीति रिवाज के विरुद्ध शंखनाद किया। असमिया भक्ति साहित्य को उन्होंने पूर्णता प्रदान की। शंकरदेव से शुरू कर क्रांतिकारी रतनमणि तक 19 विभूतियों के संबंध में प्रामाणिक जानकारी दी गई है यहाँ। इस पुस्तक को पढ़कर पूर्वोत्तर की भक्ति और क्रांति दोनों को ही समझा जा सकता है।

ISBN 978-81-237-7193-9

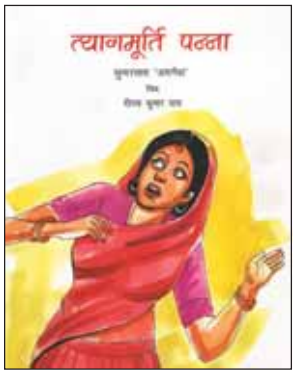

त्यागमूर्ति पन्ना

सुन्दरलाल 'अरुणेश'

पृ. 24 ₹ 45.00

हमारे देश का इतिहास अनेक वीरांगनाओं की पावन गाथाओं से भरा पड़ा है। अपने सतीत्व, मातृभूमि एवं स्वतंत्रता की रक्षा के लिए इन वीर रमणियों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। ऐसी नारियों में रानी पद्मिनी, दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, रानी चेन्नमा आदि का नाम आदर से लिया जाता है। लेकिन पन्ना दाई त्याग की वह मूर्ति थी जिसने अपने पुत्र का ही बलिदान कर दिया। इतिहास की वह ऐसी विभूति है जिसका गौरव-गान करना हर भारतीय को अच्छा लगता है। नई पीढ़ी हमारे यहाँ त्याग की ऐसी परंपरा को जान सके इस हेतु यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। बच्चों और किशोरों के लिए रचित यह काव्य पुस्तक बेहद पठनीय है।

ISBN 978-81-237-7330-8

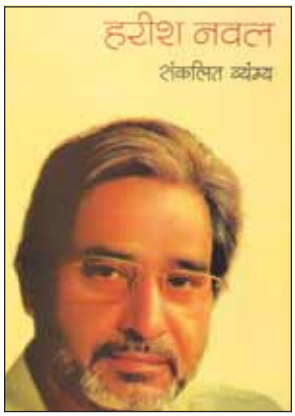

हरीश नवल (संकलित व्यंग्य)

हरीश नवल

पृ. 152 ₹ 150.00

8 जनवरी, 1947 नकोदर (पंजाब) में जन्में, पुरानी दिल्ली के प्रतिष्ठित परिवार में शायर पं. त्रिलोकनाथ 'आज़म जलालाबादी' के पौत्र और अँग्रेजी पत्रकार श्री हरिकृष्ण नवल के पुत्र हरीश नवल की वैसे तो 1962 से रचनाएँ प्रकाशित होने लगी थीं परंतु 1965 में 'नोंक झोंक' में प्रकाशित रचना कमेंट्रीदास को वे अपनी पहली व्यंग्य रचना मानते हैं। 'बागपत' के खरबूजे पर युवा ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला। इसके साथ ही अन्य चर्चित पुस्तकों में , ''दिल्ली चढ़ी पहाड़'', ''पीली छत पर काला निशान'', ''दीनानाथ के हाथ'', ''वाया पेरिस आया गाँधीवाद'' प्रमुख रहीं

ISBN 978-81-237-7163-2

भारतीय वन उपज

महेंद्र प्रताप सिंह

पृ. 380 ₹ 440.00

वन या जंगल केवल हरियाली या पर्यावरण के मित्र मात्र नहीं होते, इनसे मिलने वाले परोक्ष और प्रत्यक्ष लाभ भारत की बड़ी आबादी के जीवकोपार्जन का जरिया भी हैं। जनजातियाँ इस देश की सबसे पुरानी निवासी हैं और उनके पास उपलब्ध प्रकृति, आयुर्वेद और वनस्पतियों का ज्ञान कहीं किताबों में नहीं मिलता। ये वन ही उनकी शाला होते हैं। यह पुस्तक जंगलों से मिलने वाले काष्ठ, चारा, ईंधन के अलावा कई लघु वनोपजों की भी जानकारी देती है। इस पुस्तक में वन उत्पादों के मिलने के स्थान, उनके उपयोग के साथ-साथ वन नीतियाँ व आदिवासी, आदिवासियों के वन-अधिकार जैसे वैधानिक पक्षों को भी प्रस्तुत किया गया है।

ISBN 978-81-237-7225-7

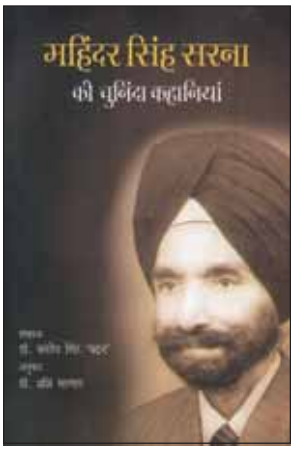

महिंदर सिंह सरन की चुनिंदा कहानियाँ

संपा : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'

अनु. : डॉ. शशि सहगल

पृ. 380 ₹ 315.00

महिंदर सिंह सरना ने जब लिखना शुरू किया, वह आरंभिक दौर पाठक बनाने का था। करतार सिंह दुग्गल की तरह महिंदर सिंह सरना ने भी अपनी कहानियों के अधिकतर विषय और पाठक, शहरी उच्चवर्ग और मध्यवर्ग की श्रेणी से चुने। हालांकि ग्रामीण धरातल को लेकर भी कई कहानियों की सर्जना की, परंतु विभाजन के बाद की अधिकतर सभी कहानियों की पृष्ठभूमि शहरी ही रही। महिंदर सिंह सरना को प्रमुख रूप से विभाजन से संबंधित कहानी लेखन के कारण जाना पहचाना जाता है। इनके कुछ कहानी संग्रह शुद्ध रूप से देश के विभाजन से संबंधित कहानियों को पेश करते हैं, जैसे ''छवियाँ दी रुत'' और ''कत्ल पंजा पानियां दा''। लेखक पूरी दुनिया में आशा की नयी किरण देखने का इच्छुक है, इसलिए ऐसे निशस्त्रीकरण के खिलाफ लोगों को अपनी रचनाओं द्वारा सजग करना चाहता है। महिंदर सिंह सरना की कहानियों की एक विशेषता यह भी है कि वह अनेक कहानियों में सूक्ष्म व्यंग्य द्वारा गहरी चोट करता है। महिंदर सिंह सरना की कहानियाँ आकार में बहुत बड़ी नहीं हैं, घटनायें और विवरणों का झरमुट भी नहीं है, पात्र हर तरह के सीधे-सादे, अहंवादी, नकचढ़े, गुस्सैल और दियानतदार मिलते हैं।

ISBN 978-81-237-7212-7

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का सूची-पत्र
मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/12/2014

भाग लें
नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

14 से 22 फरवरी, 2015

अधिक जानकारी हेतु www.newdelhiworldbookfair.gov.in पर देखें।

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच

में अपना स्थान आरक्षित करें

16 व 17 फरवरी, 2015

अधिक जानकारी हेतु www.rights@nbtindia.gov.in/
newdelhirightstable@gmail.com पर देखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

कटक पुस्तक मेला, ओडिशा	–	18 से 26 दिसंबर, 2014
जोधपुर/बीकानेर पुस्तक मेला, राजस्थान	–	दिसंबर, 2014
राँची पुस्तक मेला, झारखंड	–	मार्च, 2015
पटना पुस्तक मेला, बिहार	–	मार्च, 2015

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :
सहायक निदेशक (प्रदर्शनी)
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2,
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
दूरभाष : 011-26707700/26707778
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070